JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

'हिन्दस्वराज' की प्रासंगिकता

डॉ0 चन्द्रशेखर कुमार
–अतिथि सहायक प्रोफेसर
एम0 जे0 के0 कॉलेज, बेतिया, प0 चम्पारण
बी0 आर0 ए0 बी0 वि0वि0, मुजफ्फरपुर

महात्मा गाँधी द्वारा लिखी गयी पुस्तक ''हिन्दस्वराज'' अथवा इण्डियन होम रूल (Indian Home Rule) एक लोकप्रिय पुस्तक है जिसका पहला संस्करण 1990 को छपा था।[1] इसमें गाँधी जी के मौलिक विचार संकलित हैं। इस पुस्तक को गाँधी जी ने लन्दन से दक्षिण अफ्रीका लौटते समय जहाज में लिखी थी। वास्तव में गाँधी जी ने यह पुस्तक हिंसा के मार्ग से क्रान्ति लाने की इच्छा रखने वाले युवकों के तर्कों का जवाब देने के लिए लिखा था।[2]

किताबें सभ्यता का प्रेरक हुआ करती है। सभ्यता के प्रारम्भ काल से लेकर मध्यकाल तक आध्यात्मिक किताबें यथा उपनिषद्, बाइबिल, कुरान आदि सभ्यता का आधार थी। आधुनिक विज्ञान के विकास के कारण अब धार्मिक ग्रन्थों का सभ्यता के आधार के रूप में कोई भूमिका नहीं है। अब उनका स्थान आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक ग्रन्थों ने ले लिया है। ''हिन्दस्वराज'' इन्हीं में से एक है। यह सनातनी सभ्यता की दृष्टि से समकालीन विश्व सभ्यता के विविध आयामों को समझने के लिए एक कुन्जी है।[3] इस पुस्तक में विजित द्वारा विजेता की सभ्यता की आलोचना की गयी है। यद्यपि इसके पूर्व रमेश चन्द्र दत्त, दादा भाई नौरोजी और सखाराम गणेश देऊस्कर ने अंग्रेजी नौकरशाही राज्य की आलोचना की थी। देऊस्कर ने अपनी पुस्तक देशेर कथा जो 1904 में प्रकाशित हुई थी, में ब्रिटिश साम्राज्य की गुलामी के जंजीरों में जकड़ी, शोषण की यातना में जीती मरती भारतीय जनता का व्याख्यान किया था।[4] उन्होंने अंग्रेजों की सभ्यता की आलोचना नहीं की थी। ''हिन्द स्वराज'' में आधुनिक सभ्यता और पश्चिमी सभ्यता पर पहली बार प्रश्नचिह्न खड़ा किया गया। इस पुस्तक में उद्योगवाद, भोगवाद, बाजारवाद, शक्तिवाद, आदि अवधारणाओं को चुनौती दी गयी है तथा उनका विकल्प प्रस्तुत किया गया है। गाँधी जी कहते थे कि '' हिन्दस्वराज'' में उन्होंने जो कुछ लिखा है वह अंग्रेजों से द्वेष होने के कारण नहीं बल्कि उनकी सभ्यता से द्वेष होने के कारण लिखा है।[5] इस प्रकार गाँधी जी ने 'हिन्दस्वराज' की रचना करके प्राचीनता और अपने समय में प्रचलित सभ्यता के बीच एक सेतु का निर्माण किया है।

इक्कीसवीं सदी में भूमंडलीकरण और नव उपनिवेशवाद के द्वारा पूँजीवादी शक्तियों ने संस्कृति को भी व्यापार के दायरे में ला दिया है। इस समय व्यक्ति भौतिक उन्नति, भोग, उपभोग और स्वार्थ सिद्धि को अधिक महत्व दे रहा है। सम्पूर्ण बाजार कुछ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा संचालित है। ये कम्पनियाँ अपने निजी हितों को लक्ष्य बनाकर चलती हैं।

किसी राष्ट्र या जाति के हितों से इनका कोई मतलब नहीं होता। इस प्रकार के विचार से राष्ट्र की अवधारणा खण्डित हो रही है। इस बदलते हुए परिवेश का प्रभाव सभ्यता पर पड़ रहा है जिसके कारण हमारे विचार, वाणी और व्यवहार के बीच की खाई चौड़ी और गहरी होती जा रही है। सहज और सरल जीवन से दूर हम कृत्रिमता की ओर भाग रहे हैं। ''तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौ चाहसि उजियार'' नहीं फैल रहा है। चारोंओर दिखावट, सजावट और आडम्बर का बोल–बाला है। महात्मा गाँधी का ''हिन्दस्वराज'' इन अवधारणाओं को चुनौती देता है। इस पुस्तक से आधुनिकता का अंत होता है और उत्तर आधुनिकता की नींव पड़ती है।[6] पश्चिमी विद्वानों ने इस घटना को 1960 के दशक के छात्र आन्दोलन में देखा और अस्सी के दशक के अन्त में सोवियत संघ के विघटन में देखा गया। जार्ज ऑरवेल की पुस्तक जो सावियत तानाशाही पर कठोर टीका है आज के उदारीकरण के नाम से चलने वाले एकाधिपत्य पर वह सटीक उतरती है।[7] स्टालिनवाद, हिटलरशाही और उदारीकण का आधिपत्य ये तीनों आधुनिक औद्योगीकरण के अमानवीय परिणाम है। गाँधी जी का ''हिन्दस्वराज'' इस अमानवीय औद्योगीकरण के खिलाफ है।[8] वर्तमान विश्व में जो सैकड़ों आन्दोलन, पर्यावरण की रक्षा, हिंसक साधनों का बहिष्कार, बाजारवाद का विरोध, सत्ता के विकेन्द्रीकरण और निर्धनता उन्मूलन के लिए चल रहे हैं, उनकी प्रेरणा बीजरूप में इस पुस्तक में विद्यमान है। ऐसा लगता है कि महात्मा गाँधी द्वारा ''हिन्द स्वराज'' इक्कीसवीं सदी के लिए ही लिखी गयी थी।

''हिन्द स्वराज'' नयी पीढ़ी के लोगों के लिए बहुत प्रासंगिक है। पुरानी पीढ़ी के पढ़े लिखे लोगों ने गाँधी जी के प्रति उपेक्षा भाव दिखाया था। इन लोगों ने हिन्द स्वराज को व्यवस्थित तरीके से पढ़ने एवं उसके गम्भीर निहितार्थों को समझने की कोशिश नहीं की। गाँधी जी के अधिकांश प्रमुख अनुयायियों एवं आत्मीय मित्रों ने हिन्द स्वराज को अव्यवहारिक एवं कमजोर कृति कहा था। उनके कुछ विरोधियों ने उन्हें एक खतरनाक एवं आत्ममुग्ध करनेवाला बहुरूपिया कहा, किसी ने उन्हें अंग्रेजों का एजेण्ट कहा, किसी ने उन्हें छद्म ईसाई कहा और किसी ने उन्हें भारत के बँटवारे के लिए उत्तरदायी ठहराया। कुछ लोगों का मानना था कि ''हिन्द स्वराज'' द्वारा गाँधी जी समाज को सौ वर्ष पीछे ले जाना चाहते हैं। वे पाश्चात्य सभ्यता का विरोध करके भारतीय सभ्यता को कूपमण्डूक बना देना चाहते हैं।[9] इस प्रकार के अनेक आरोप गाँधी जी के विरोधियों द्वारा लगाये गये। इससे ऐसा लगता है कि गाँधी जी के जीवन काल में ''हिन्द स्वराज'' को ठीक से पढ़ने और समझने की कोशिश नहीं की गयी। अगर ऐसा किया गया होता तो गाँधी जी की व्यवहारिकता भारतीयता, सनातनी हिन्दू पारम्परिकता एवं दूरदृष्टि के बारे में संशय उत्पन्न न होता। जिस समय हिन्द स्वराज की रचना हुई थी उस समय भारत अंग्रेजों का गुलाम था। भारत पर शासन करनेवाले लोग ईसाई और आधुनिक थे। उन्होंने आधुनिकता और ईसाइयत का एक अजीब घालमेल कर दिया था। यहाँ का मध्यवर्ग उनका अनुसरण करने में लगा हुआ था। वह बौद्धिक दृष्टि से गुलाम था। गाँधी जी की बात को वही आदमी समझ सकता था जो न तो आधुनिक पश्चिम सभ्यता से प्रभावित रहा हो और न ही पश्चिमी ईसाइयत से। ऐसी स्थिति भारत की स्वतंत्रता के बाद ही हो सकती थी। 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ, लेकिन उस पर शासन उन्हीं लोगों का रहा जो गुलाम भारत में पैदा हुए थे। जब तक स्वतंत्र भारत में पैदा हुए और पले बढ़े लागों का वर्चस्व राजनीतिक, बौद्धिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में नहीं हो जाता तब तक ''हिन्दस्वराज'' के निहितार्थों को समझना सम्भव नहीं है।[10] इसलिए हिन्द स्वराज आज प्रासंगिक है। भारत की यह नयी पीढ़ी अगर बिना किसी पूर्वाग्रह एवं पूर्वानुमान के हिन्द स्वराज का जिज्ञासा भाव से अध्ययन करेगी तो ''हिन्द स्वराज'' उन्हें बहुत व्यावहारिक युक्तिपूर्ण एवं प्रासंगिक नजर आयेगा।

आधुनिक सभ्यतामूलक रोग का जन्म इंग्लैण्ड के ''ग्लोरियस रिवोल्यूशन (Glourious Revolution) से माना जाता है। लॉक की पुस्तक ''ऐसे कनसिर्निंग ह्यूमन अन्डर स्टेण्डिंग'' (Essay Concerning Human Understanding) 1690 को आधुनिकता का पहला व्याकरण माना जाता है! इक्कीसवीं सदी का भारत इस आधुनिक सभ्यता के रोग से ग्रसित हैं जिसका नाम है– उदारवादी पूँजीवाद। इस सदी के आरम्भ से ही नए आर्थिक भविष्य की जादुई कुन्जी के रूप में व्यापक और असंदिग्ध रूप से शासक वर्ग द्वारा ही नहीं बल्कि वृहत् मध्यवर्गीय समाज द्वारा भी स्वीकृति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त है। इस पूँजीवादी व्यवस्था के अन्तर्गत संसार में बड़े पैमान पर द्वेष, ईर्ष्या, असत्य, पापाचरण आदि दुर्गणों का विकास हो रहा है। सच्चाई और सादगी धीरे–धीरे समाप्ति की ओर बढ़ रही है। न्याय भी नाम मात्र का बचा है। सभी जगह घोटालों की भरमार है। समाज और व्यक्ति दोनों किंकर्तव्यविमूढ़ दिखाई पड़ रहे हैं। यह कैंसर की तरह आदमी के सारे निजी और सामाजिक सम्बन्धों को नष्ट कर रहा है। यह व्यवस्था आदमी के स्वभाव में निहित लोलुपता और आक्रामकता को गरिमा मण्डित कर इसे समाज के मूल्यों का आधार बनाती है। पूँजीवादी व्यवस्था का एक ही देवता है मुनाफे की चाहत।[11] इसको प्राप्त करने के लिए सभी तरह के झूठ, फरेब, हिंसा, नरसंहार, माध्यम है। मानवता का भविष्य सुरक्षित नहीं दिखाई पड़ रहा है। मानव समाज की संरचना विनाश के कागार पर है। तत्काल इस व्यवस्था को बदलनें की आवश्यकता है। मानव के हित में एक ऐसी व्यवस्था स्थापित करने की जरूरत है जो सादगी और सामुदायिकता पर आधारित हो। अगर ऐसा नहीं किया जाता है तो संसार के विनाश को टाला नहीं जा सकता है। यूनान के एक मिथक में सायरन संगीत का उल्लेख हैं जिसके आकर्षण से नाविक भटक कर नष्ट हो जाते थे। उदारवादी पूँजीवादी व्यवस्था का आकर्षण भी कुछ वैसा ही है। लोग होशहवाश खोकर अन्धा–धुन्ध इसकी ओर भाग रहे हैं। इससे आनेवाले अनिवार्य मौत आँखों से ओझल हो जाती है।

उपर्युक्त समस्या के समाधान के लिए ''हिन्दस्वराज'' को एक विकल्प प्रस्तुत करने वाली किताब कह सकते हैं। यह पुस्तक स्वतंत्रता और समता को बुनियादी नैतिकता के रूप में स्वीकार करती है, लेकिन उन्हें दूरगामी फल की तरह नहीं बल्कि फल तक पहुँचने की प्रक्रिया में ही सिद्ध करना चाहती है। गाँधी जी व्यवस्था परिवर्तन तो चाहते थे, लेकिन व्यवस्था पर काबिज होकर नहीं बल्कि उसकी प्रक्रिया को बदलकर। वस्तुतः एक स्वतंत्र और समताशील समाज का अर्थ है– एक अहिंसक समाज, एक सत्याग्रही समाज क्योंकि सत्य और अहिंसा एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। गाँधी जी कहते थे कि अगर शोषण, दमन, उत्पीड़न से मुक्त समाज के सपने को चरितार्थ करना है तो उसके लिए उसी वैकल्पिक प्रौद्योगिकी और राजतंत्र के विकास की दिशा में प्रयत्नशील होना होगा, जिसको उन्होंने ''हिन्दस्वराज'' में व्याख्यायित किया है। गाँधी जी ने इसीलिए आधुनिकतावादी प्रौद्योगिकी पर आश्रित सभ्यता को **''शैतानी सभ्यता''** के नाम से परिभाषित किया था।

गाँधी जी ''हिन्दस्वराज''[12] में स्वराज को परिभाषित करते हुए तीन मुख्य बातें कहते हैं जो निम्नवत् हैंः–

1. अपने मन का राज्य स्वराज्य है।
2. उसकी कुन्जी सत्याग्रह, आत्मबल या करूणा बल है।
3. उस बल को अजमाने के लिए स्वदेशी को पूरी तरह अपनाने की जरूरत है।

उपर्युक्त तीनों सूत्रों के माध्यम से महात्मा गाँधी एक हिंसक समाज के विकल्प का प्रस्ताव करते हैं। आधुनिक उदारवादी पूँजीवादी व्यवस्था ने हमें जिस परिस्थिति में पहुँचा दिया है उससे उबरने का एक ही विकल्प सम्भव है और वह है अहिंसक प्रौद्योगिकी जिसका विवरण ''हिन्दस्वराज'' में किया गया है। इस प्रकार ''हिन्द स्वराज'' आज के समय की ऐतिहासिक आवश्यकता है। गाँधी जी ने इस लघु पुस्तिका में अपना समस्त चिंतन का समासीकरण कर दिया है।

सन्दर्भ सूचीः

1. महात्मा गाँधीः हिन्दस्वराज, अनु0 ए0टी0 नाणावटी, सर्वसेवा संघ वाराणासी, पृ0 87
2. डा0 रामजी सिंह, गाँधी दर्शन मीमांसा, पृ0 216
3. समाजिक वार्ता, सं0 योगेन्द्र यादव, मई 2009 पृ0 7, एवं अगस्त 2009, पृ0–26
4. देश की बात, सखाराम गणेश दउस्कर अनु0 बाबूराम विष्णु पराड़कर, नेशनल बुक ट्रस्ट, इण्डिया, पृ0 168
5. गाँधी विचार, दर्शन धर्म, राजनीति और अर्थनीति–रामजी सिंह, मानक पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ0 85
6. भारतीय पक्ष, सम्पादक, विमल कुमार सिंह, नई दिल्ली, 2005, पृ0 32
7. राजनीति चिन्तन की रूपरेखा, ओम प्रकाश गाबा, पृ0 323 नोएडा,
8. ''हिन्द स्वराज'' नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1941, पृ0 87
9. चन्द्रशेखर शुक्ल, Gandhis's view of Life, भारतीय विद्याभवन, पृ0 121
10. Mahatma Gandhi ed. S Radhkrishnan, पृ0 448 बम्बई।
11. The Philosophy of Mahama Gandhi, Dr D.M. Datta. पृ0 96
12. गाँधीः समाजवाद, हिन्दी प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद, पृ0 66